संस्थापित १८९७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२३ ● अंक-२६ ● २५ जून २०१६ आषाढ़ कृष्ण पक्ष अष्टमी संवत् २०७६ ● दयानन्दाब्द १६६ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३१२०

योग प्राचीन काल से ही विश्व को प्रभावित करता रहा है –डॉ० धीरज सिंह, सभा प्रधान

विश्वगुरू भारत वर्ष की महिमा पुराकाल से ही विश्व को प्रभावित करता रहा है। पूर्व समय में चरित्र निर्माण आन्दोलन, शिविरों के रूप में सम्पन्न हुआ करते थे। लोग श्रद्धापूर्वक अपने चरित्र को शुद्ध करने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करते थे। पुण्य शालिनी भारत वर्ष की गरिमा महान् थी। जहाँ स्वर्ग से देवता लोग भी जन्म लेने के लिए उत्सुक रहते थे। आज पुनः वही वातावरण योग ऋषि स्वामी रामदेव जी के अत्यन्त पुरूषार्थ का परिणाम है कि योग विषय आबाल बृद्ध की मानसिकता के लिए पाथेय बना हुआ है। जो योग मात्र साधु, सन्यासी योगी ऋषि–महर्षियों तक सीमित था। आज उसका आसन प्राणायाम भाग जनमानस के लिए उपयोगी हो गया है। आज की परिस्थतियों में अनिवार्य भी कुछ लोग इसे मजबूरी भी कहते हैं। मेरा मानना है कि आप भोजन और नींद की तरह इसे भी दिनचर्या का एक अंग बनाकर देखें दिन प्रतिदिन उत्तरोत्तर प्रगति प्राप्त कर प्रसन्नता का अनुभव करेगें ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। योग का आधार है, आसन प्राणायाम का आधार है, अतः स्वस्थ एवं सुखी बनने के लिए प्रातः काल आलस्य रूपी शत्रु से सावधान होकर ''योगः कर्मसु कौशलम्'' अपने–अपने कार्य में कुशलतापूर्वक व्यवहार करने के लिए समय का सदुपयोग करते हुए योगासन–प्राणायाम करें। ''समत्वं योग उच्यते'' समता के व्यवहार को अपना कर योग द्वारा सुखी रहे। दिनचर्या में समत्व व्यवहार को महत्व प्रदान करें। आहार में बोलचाल में मधुरता प्रदान व्यवहार करे। सम्मान प्राप्त करने को इच्छुक सम्मान देना भी सीखें। कठोरता अनुशासन के अतिरिक्त हानि प्रदान करती है। शरीर में लचीलापन लाने के लिए योगासन करें स्वस्थ व्यक्ति की पहिचान है– ''पैर गरम, पेट नरम, सिर ठण्डा'' अतः इसे सुरक्षित रखने का यथाशक्ति पुरूषार्थ ही आपकी पवित्र कठोर नियमित दिनचर्या ही तपस्या है। जिस मिट्टी में तपकर आपका जीवन रूपी सुवर्ण कुन्दन बनकर तेजस्वी बनेगा। आपका उत्साह बड़ेगा, शरीर में शक्ति का अनुभव होगा और प्रसन्नता पूर्वक प्रत्येक कार्य करने के लिए उत्साहित रहेगें। मैं मा० प्रधानमंत्री जी की सुन्दर पहल का स्वागत करते हुए समस्त देशवासियों को स्वस्थ और निरोग रहने की कामना करता हुँ सभी देशवासियों को ५वें योग दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं।

विश्व योग दिवस भारतवर्ष को पुनः बनायेगा विश्वगुरू

-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

२१ जून–गढ़मुक्तेश्वर–विश्वयोग दिवस भारतवर्ष को पुनः बनायेगा विश्वगुरू आज पूरा विश्व भारत वर्ष और कुछ आशाभरी दृष्टि से देख रहा है जैसा महर्षि मनु ने कई हजार वर्ष पूर्व हिमालय की चोटी पर खड़े होकर उद्घोषणा की थी कि ऐ संसार के लोगों आप अपने जीवन की उन्नति के लिए चरित्र की शिक्षा लेने के लिए भारत की पुण्य भूमि पर तपस्या कर रहे ऋषियों के चरणों में आओ और जीवन जीने की कला सीखो यह प्रथम राजा महर्षि मनु का सन्देश आज विश्व में सार्थक होता हुआ दिखाई दे रहा है जो प्रत्येक जिला स्तर से लेकर प्रदेश, देश, और दुनिया के १७२ देशों में एक साथ योग का चमत्कार दिखाई दे रहा है अतः अब भारत को विश्व गुरू बनने से काई नहीं रोक सकेगा। भारतमाता के सच्चे सपूत योगाचार्य अब पूरे विश्व में योग शिक्षा का प्रशिक्षण देने के लिए निकल चुके हैं ये विचार गुरूकुल पूठ के संचालक एवं योगाचार्य (डी.एम. पब्लिक स्कूल गढ़ में) स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती योग दिवस पर प्रशिक्षण देते हुए व्यक्त कर रहे थे आपने बताया कि गुरूकुल परम्परा में जो दिनचर्या है १९६५ से योग को सीखकर हजारों लोगों को सिखाया है और उन्हें आरोग्य प्रदान किया है। योग एक ऐसी वैज्ञानिक पद्धति है जिसमें सदैव चमत्कारिक लाभ होता है। योग करने वाला प्रत्येक व्यक्ति विशिष्टता से सुशोभित होगा जैसे सिपाही योग करेगा आदर्श सिपाही बनेगा–अध्यापक योग करेगा आदर्श आचार्य बनेगा, खिलाड़ी योग करेगा–श्रेष्ठ खिलाड़ी बनेगा, विद्यार्थी योग करेगा–आदर्श छात्र बनेगा व्यापारी योग करेगा स्वस्थ व्यापारी बनेगा इसे प्रत्येक विभाग में अनुभव करके देख सकते हैं योगी सच्चा ईशभक्त, देश भक्त, मातृ–पितृभक्त और गुरूभक्त बनेगा संसार में आज जो विपरीत परिस्थितियां है उन परिस्थितियों में योगी ही सन्तुलन बनाकर रह सकता है''समत्वं योग उच्यते'' गीता के इस प्रमाण से सुख, दुःख, लाभ– हानि, मान–अपमान, भूख–प्यास, गर्मी–सर्दी, यश–अपयश, प्रत्येक स्थिति में अपने को सम रखने वाला योगी होता है। योग को आप सामान्य रूप में न लें इसे जीवन का अंग बनायें दिनचर्या में अनिवार्य करने का संकल्प लेगें तभी इन विशिष्ट गुणों से युक्त हो सकेगें स्वामी जी ने प्राणायाम पर अधिक प्रकाश डालते हुए बताया कि अनुलोम–विलोम प्राणायाम बड़ा सरल है लेकिन उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप–हृदय की बीमारी मानसिक उत्पीड़न, रक्त विकार आदि बीमारियों में बड़ा लाभ करता है आंख, कान की कमजोरी भी दूर करके ऊर्जा प्रदान करता है योगासनों का अभ्यास कराते हुए मण्डूक आसन के विशेष लाभ बताये जैसे अस्थमा, श्वास, खांसी मधुमेह, पथरी आंत उतरना गुर्दे की बीमारियों में भी तथा पौरूष ग्रन्थी में भी लाभ करता है प्राणायाम के साथ करने की विधि सीखने का अभ्यास करना है मेंढक और कछुए ही आयु प्राणायाम से ही लम्बी होती है आप सभी आज संकल्प लें कि हम स्वस्थ रहने के लिए प्रतिदिन योग किया करेंगे। सभी देशवाशियों को ५वें योग दिवस की हार्दिक शुभकामनायें।

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

योग से सम्पूर्ण विश्व को जोड़ा जा सकता है

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन महत्वपूर्ण है। इसका सदुपयोग हो ताकि उस दिन दुनियाभर में योग को उसकी पूरी गरिमा व महत्ता के साथ सामने रखा जा सके, उसका उत्सव मनाया जा सके। इससे दुनिया भर के लोग न सिर्फ इसके विशुद्ध स्वरूप से परिचित हो सकेंगे, बल्कि योग की अतुलनीय और सार्वभौमिक अपील के बारे में जान सकेंगे और महसूस कर सकेंगे। योग किसी भी मत और संप्रदाय से नहीं जुड़ा है। योग प्रेम, अहिंसा, करूणा और सबको साथ लेकर चलने की बात करता है। योग मत, नस्ल, जाति, वर्ण, क्षेत्र या भाषा के आधार पर जन्में भेदभाव से परे है, इसलिए इसमें पूरी दुनिया को एक परिवार के तौर पर बांधने की क्षमता है।

किसी भी प्रकार के दर्शन, धर्म या संस्कृति के लिए अस्तित्व में बने रखना सरकार के सहयोग के बिना असंभव है। योग अब तक एक अनाथ की तरह से अस्तित्व में था, लेकिन संयुक्त राष्ट्र के द्वारा योग के महत्व को समझ लिए जाने के बाद अब सारे विश्व को योग से लाभ होगा।

भारत ही वह देश है जहां योग की शुरूआत हुई और अब समय आ गया है जब योग को सभी जगह फैलाने की जिम्मेदारी हमारे देश को ले लेनी चाहिए। योग का आरम्भ कक्षाओं से किया जाना चाहिए। योग एक जीवनशैली है और इसे सिर्फ आसन समझना गलत है। बीमारीयुक्त शरीर, हिचकिचाहट से मुक्त आवाज, चिंतामुक्त दिमाग, आत्मविश्वास से भरा व्यक्तित्व और सोच, आसक्तिमुक्त यादें, गर्व की अनुपस्थिति और दुःखों से मुक्त आत्मा ही एक श्रेष्ठ योगी के लक्षण हैं।

योग, जीवन की प्रक्रिया की छानबीन है। इसने मानव के सामने संभावनाओं को खोलने का काम किया जिसने इंसान कुदरत की ओर से तय की गई सीमाओं से परे जा सके। योग विज्ञान को उसक विशुद्ध रूप में दुनिया को मुहैया कराने की जिम्मेदारी इस पीढ़ी की है। आंतरिक व आत्मिक विकास, मानव कल्याण व मुक्ति से जुड़ा यह विज्ञान भावी पीढ़ी के लिए एक महानतम देन है।

यह एक बेहद विशेष और गंभीर मौका है। आज योगिक विज्ञान जितना महत्वपूर्ण हो उठा है, इससे पहले यह कभी इतना महत्वपूर्ण नहीं रहा। आज हमारे पास विज्ञान और तकनीक के तमाम साधन मौजूद हैं, जो इस दुनिया को बना और मिटा सकते हैं। ऐसे में यह बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है कि हमारे भीतर जीवन के प्रति जागरूक और ऐसा भाव बना रहे कि हम रह दूसरे प्राणी को अपना ही अंश महसूस कर सकें। वरना अपने सुख और भलाई के पीछे की हमारी दौड़ सब कुछ बर्बाद कर देगी। अगर दुनियां की कुछ आबादी भी इसका अनुभव कर ले, सचमुच ध्यान के मार्ग पर चलने लगे तो निश्चित तौर पर दुनिया की गुणवत्ता और स्तर में सुधार आएगा। खासकर विश्व के नेताओं ने अगर अपने जीवन में एकात्मकता को, जीवन के योग को समझ लिया और उसे महसूस कर लिया तो दुनिया में खासा बदलाव आ जाएगा। जीवन के प्रति अपने नजरिये में विस्तार लाने, व्यापकता लाने में ही मानव-जाति की सभी समस्याओं का समाधान है। उसे निजता से सार्वभौमिकता या समग्रता की ओर चलना होगा। विश्व योग दिवस इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो इस पूरी धरती पर एक लहर पैदा कर सकता है तथा सम्पूर्ण विश्व को जोड़ सकता है।

— सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ नवमसमुल्लासारम्भः

अथ विद्याऽविद्याबन्धमोक्षविषयान् व्याख्यास्यामः

प्रश्न-मुक्ति एक जन्म में होती है वा अनेकों में?

उत्तर- अनेक जन्मों में। क्योंकि-

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे पराऽवरे।।१।। —मुण्डक।।

जब इस जीव के हृदय की अविद्या अज्ञानरूपी गांठ कट जाती, सब संशय छिन्न होते और दुष्ट कर्म क्षय को प्राप्त होते हैं तभी उस परमात्मा जो कि अपने आत्मा के भीतर और बाहर व्याप रहा है; उसमें निवास करता है।

प्रश्न- मुक्ति में परमेश्वर में जीव मिल जाता है वा पृथक् रहता है?

उत्तर- पृथक रहता है। क्योंकि जो मिल जाय तो मुक्ति का सुख कौन भोगे मुक्ति के जितने साधन हैं वे सब निष्फल हो जावें। वह मुक्ति तो नहीं किन्तु जीव का प्रलय जानना चाहिये। जब जीव परमेश्वर की आज्ञापालन, उत्तम कर्म, सत्संग, योगाभ्यास पूर्वोक्त सब साधन करता है वही मुक्ति को पाता है।

सत्यं ज्ञानमन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्।
सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति।। —तैत्तिरी0।

जो जीवात्मा अपनी बुद्धि और आत्मा में स्थित सत्य ज्ञान और अनन्त आनन्दस्वरूप परमात्मा को जानता है वह उस व्यापक रूप ब्रह्म में स्थित होके उस 'विपश्चित्' अनन्तविद्यायुक्त ब्रह्म के साथ कामों को प्राप्त होता है। अर्थात् जिस-जिस आनन्द की कामना करता है उस-उस आनन्द को प्राप्त होता है। यही मुक्ति कहाती है।

प्रश्न- जैसे शरीर के बिना सांसारिक सुख नहीं भोग सकता वैसे मुक्ति में बिना शरीर आनन्द कैसे भोग सकेगा?

उत्तर- इसका समाधान पूर्व कह आये हैं और इतना अधिक सुनो-जैसे सांसारिक सुख शरीर के आधार से भोगता है वैसे परमेश्वर के आधार मुक्ति के आनन्द को जीवात्मा भोगता है। वह मुक्त जीवन अनन्त व्यापक ब्रह्म में स्वच्छन्द घूमता, शुद्ध ज्ञान से सब सृष्टि को देखता, अन्य मुक्तों के साथ मिलता, सृष्टिविद्या को क्रम से देखता हुआ सब लोकलोकान्तरों में अर्थात् जितने ये लोक दीखते हैं, और नहीं दीखते उन सब में घूमता है। वह सब पदार्थों को जो कि उसके ज्ञान के आगे हैं सब को देखता है। जितना ज्ञान अधिक होता है उसको उतना ही आनन्द अधिक होता है। मुक्ति में जीवात्मा निर्मल होने से पूर्ण ज्ञानी होकर उसको सब सन्निहित पदार्थों का भाव यथावत् होता है।

यही सुखविशेष स्वर्ग और विषय तृष्णा में फंसकर दुःखविशेष भोग करना नरक कहाता है। 'स्वः' सुख का नाम है। 'स्वः सुखं गच्छति यस्मिन स स्वर्गः' 'अतो विपरीतो दुःखभोगो नरक इति' जो सांसारिक सुख है वह सामान्य स्वर्ग और जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है वही विशेष स्वर्ग कहाता है।

सब जीव स्वभाव से सुखप्राप्ति की इच्छा और दुःख का वियोग होना चाहते हैं परन्तु जब तक धर्म नहीं करते और पाप नहीं छोड़ते तब तक उनको सुख का मिलना और दुःख का छूटना न होगा। क्योंकि जिस का कारण अर्थात् मूल होता है वह नष्ट कभी नहीं होता। जैसे-

छिन्ने मूले वृक्षो नश्यति तथा पापे क्षीणे दुःखं नश्यति।

जैसे मूल कट जाने से वृक्ष नष्ट हो जाता है वैसे पाप को छोड़ने से दुःख नष्ट होता है। देखो! मनुस्मृति में पाप और पुण्य की बहुत प्रकार की गति-

मानसं मनसैवायमुपभुङ्क्ते शुभाऽशुभम्। वाचा वाचा कृतं कर्म कायेनैव च कायिकम्।।१।।
शरीरजैः कर्मदोशैर्याति स्थावरतां नरः। वाचिकैः पक्षिमृगतां मानसैरन्त्यजातिताम्।।२।।
यो यदैषां गुणो देहे साकल्येनातिरिच्यते। सं तदा तद्गुणप्रायं तं करोति शरीरिणम्।।३।।
सत्त्वं ज्ञानं तमोऽज्ञानं रागद्वेषौ रजःस्मृतम्। एतद्व्याप्तिमदेतेषां सर्वभूताश्रितं वपुः।।४।।
तत्र यत्प्रीतिसंयुक्तं किञ्चिदात्मनि लक्षयेत्। प्रशान्तमिव शुद्धाभं सत्त्वं तदुपधारयेत्।।५।।
यत्तु दुःखसमायुक्तम् अप्रीतिकरमात्मनः। तद्रजोऽप्रतिघं विद्यात् सततं हारि देहिनाम्।।६।।
यत्तु स्यान्मोहसंयुक्तमव्यक्तं विषयात्मकम्। अप्रतर्क्यम् अविज्ञेयं तमस्तद् उपधारयेत्।।७।।
त्रयाणामपि चैतेषां गुणानां यः फलोदयः। अग्र्यो मध्यो जघन्यश्च तं प्रवक्ष्याम्यशेषतः।।८।।
वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानं शौचिमिन्द्रियनिग्रहः। धर्मक्रियात्मचिन्ता च सात्त्विकं गुणलक्षणम्।।९।।
आरम्भरुचिताऽधैर्य्यम् असत्कार्यपरिग्रहः। विषयोपसेवा चाजस्त्रं राजसं गुणलक्षणम्।।१०।।
लोभः स्वप्नोऽधृतिः क्रौर्यंनास्तिक्यं भिन्नवृत्तिता। याचिष्णुता प्रमादश्च तामसं गुणलक्षणम्।।११।।
यत्कर्म कृत्वा कुर्वंश्च करिष्यंश्चैव लज्जति। तज्ज्ञेयं विदुषा सर्वं तामसं गुणलक्षणम्।।१२।।
येनास्मिन्कर्मणा लोके ख्यातिमिच्छति पुष्कलम। न च शोचत्यसम्पत्तौ तद्विज्ञेयं तु राजसम्।।१३।।
यत्सर्वेणेच्छति ज्ञातुं यन्न लज्जति चाचरन्। तेन तुष्यति चात्मास्य तत्सत्त्वगुणलक्षणम्।।१४।।
तमसो लक्षणं कामो रजसस्त्वर्थ उच्यते। सत्त्वस्य लक्षणं धर्मः श्रैष्ठ्यमेषां यथोत्तरम्।।१५।।

मनु0 अ0 12।।

क्रमशः

धरोहर

आर्य समाज के पुराने भजनोपदेशक

कुँवर सुखपाल सिंह आर्य (मुजफ्फर नगर)

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

आर्य समाज के प्रसार–प्रचार में सर्वाधिक योगदान आर्यभजनोपदेशकों का रहा है इनका अनुभव ग्रामीण आर्य समाजों में जाने पर होता है जब वहाँ के पुराने आर्यसमाजी सुनाते हैं कि हमारे यहाँ कभी दादा वस्तीराम जी आते थे कभी म० लटूर सिंह जी आते थे उनके कई दिनों तक भजन होते थे वे भजनों में ही वैदिक सिद्धान्त, आर्यविचार, संस्कार देकर लोगों के मन मस्तिष्क में आर्य परम्परा को स्थापित कर देते थे ऐसे ही आर्य समाज के पुराने आर्य भजनोपदेशक हैं श्री कुँवर सुखपाल सिंह जी आर्य आपका नाम देहात की आर्य समाजों में आज भी सम्मान से स्मरण किया जाता है। आपका जन्म २३/१/१६३२ में ६२ वर्ष पूर्व करोन्दाहाथी नामक ग्राम में माता भगवती–पिता शंकरलाल आर्य के घर पर हुआ जो मु० नगर उ०प्र० में आता है। प्रारम्भिक शिक्षाप्राप्त करके संगीत में आपकी रूचि थी अतः भजन गाने का प्रशिक्षण विधिवत् प्राप्त कर लिया और आर्य समाज के उपदेशक के रूप में आपकी प्रसिद्धि हो गई आप ग्रामों में इतिहास सुनाकर जन–जगरण पैदा किया करते रहे आज भी वृद्धावस्था में कही उत्सव हो तो १ भजन अवश्यमेव सुनाते हैं आपका स्वभाव मधुर एवं हास्य रस से परिपूर्ण रहता है मेरा परिचय गुरूकुल ततारपुर में पढ़ते हुए ही हो गया था उन दिनों वर्तमान में प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नरेश जी निर्मल आपके साथ चीमटा बजाते हुए गीत गाना सीखने का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे बाल्यावस्था थी सुन्दर गाते थे तब गुरूकुल के प्रचारार्थ कई ग्रामों में आपके कार्यक्रमों को सुनने का अवसर मिला वही प्राथमिक परिचय हुआ जो इस प्रकार है ११ वर्ष की आयु में म० कल्याणेदव जी द्वारा गुरूकुल कांगड़ी की शाखा गुरूकुल घासी पुरा में प्रवेश दिलाया गया वहीं रहकर संगीत शिक्षा का भी अभ्यास किया गुरूकुल के वार्षिक उत्सव पर आपके गीत से प्रभावित होकर शास्त्रार्थ महारथी श्री रामचन्द्र देहलवी जी ने चाँदी का १ रूपया १६४४ में दिया था तथा आर्य शिरोमणि प्रवर वक्ता कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर जी ने कुँवर सुखपला आर्य के नाम से उपाधि देकर सम्मानित किया था १६५४ से १६५५ तक चौ० पृथ्वी सिंह जी बेड़क के शिष्यत्व में विशेष वेद प्रचार प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा भजनोपदेशक कविताओं का ढंग सीख लिया उन्हें गुरू दक्षिणा देकर विधिवत् दीक्षा प्राप्त की उसके बाद निरन्तर वेद प्रचार का संकल्प लिया। हिन्दी रक्षा आन्दोलन–गोरक्षा आन्दोलन में बढ़चढ़कर भाग लिया १६६२ में भारत–चीन युद्ध के समय श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री जी के निर्देशन में देश की सीमा पर भारतीय वीरों को जोश पैदा करने के लिए प्रचार किया २४ दिन नेका बार्डर पर प्रचार किया ३ मुस्लिम लड़कों को आर्य उपदेशक बनाया ३१ शिष्य मण्डली तैयार की ४८ पुस्तकें इतिहास भजनों की लिखी कैप्टनदेवरत्न जी मुम्बई ने आपको वहाँ पर बुलाकर सम्मानित किया आपके ४ पुत्र एवं १ पुत्री ५ सन्तानें हुई चारों सन्ताने आर्य समाज के कार्य के लिए समर्पित कर दिया आगे आपने अपने दोनों पुत्रों को गुरूकुल तातारपुर में पढ़ने के लिए प्रवेश दिलाया इस माध्यम से लगभग हर मास मिलने का अवसर प्राप्त होता रहता था। मैंने गुरूकुल का आचार्य बनने पर घोषणा कर दी थी कि आर्य समाज के भजनोपदेशकों के पुत्रों को गुरूकुल में पढ़ाने पर कोई शुल्क नहीं लूँगा इसका परिणाम अच्छा और कई योग्य विद्वान् तथा आर्य समाज के उपदेशक बनकर आज प्रचार कार्य कर रहे हैं मुझे यह सुनाते हुए भी अच्छा लग रहा है।

आपके पुत्र सुभाष आर्य एवं सतीश

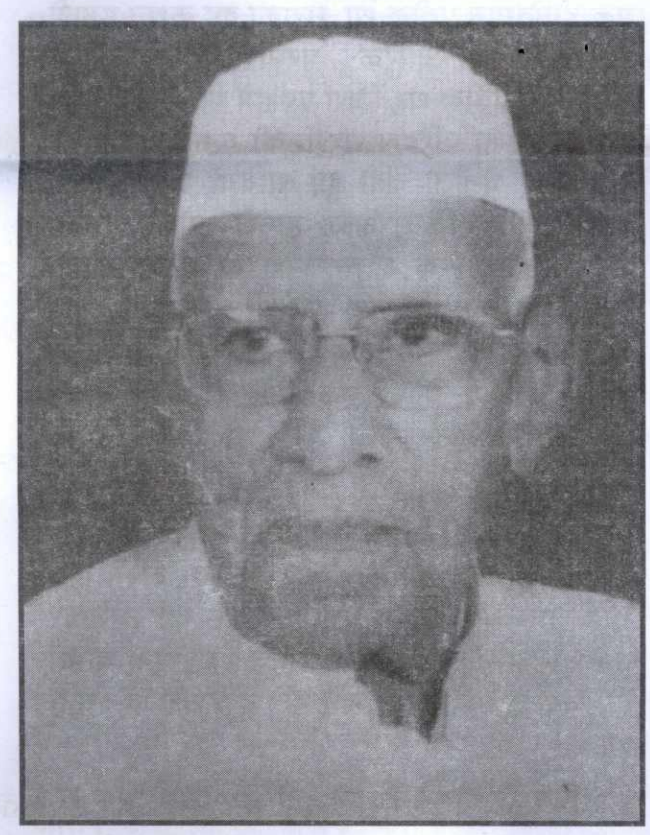

आर्य भजनोपदेशक के रूप में कार्य कर रहे हैं। श्री सुखपाल सिंह आर्य जी समाज के कार्यक्रम स्वयं अपने परिचय से भी बना लेते थे कोई वार्षिक सम्मेलन हो ऐसा भी कोई अनिवार्य नहीं था जब खाली हुए किसी भी ग्राम में जाकर प्रचार प्रारम्भ कर दिया करते थे। गुरूकुल के लिए अन्न संग्रह करना है तो किसी भी ग्राम में रात्रि में प्रचार करते थे और दिन में अन्न संग्रह हो जाया करता था लगभग १६७०–७१ की बात है मेरठ जिले की सरधना तहसील में पाथौली ग्राम है वहाँ आर्य समाज सक्रिय है चौ० बलराम जी आर्य म० बेगराज सिंह आर्य म० ओमवीर सिंह आर्य, ओम प्रकाश आर्य, शैलेन्द्र आर्य, श्रवण आर्य के पिता जी मुख्य कार्यकर्त्ता थे जाडे का मौसम था ३ दिन का कार्यक्रम रख लिया गया म० सुखपाल सिंह जी रात्रि में ३ घण्टे तक इतिहास सुनाया करते थे लोगों का मनोरंजन एवं शिक्षा तथा संस्कारों का भी प्रचार हुआ करता था। हम छात्रावस्था में थे हमारे व्यायाम प्रदर्शन का प्रभाव विशेषरूपेण युवाओं एवं किशोर बच्चों पर पड़ता था गुरूकुल पढ़ने के लिए कुछ छात्र तैयार हो जाया करते थे। मुझे स्मरण आता है जब मैं व्यायाम करता था उस समय मंच संचालन कुँ. सुखपाल जी ही करते थे और कोई पुरस्कार में रूपये देता तब पुरस्कार राशि कोई अधिक नहीं होती थी पर उस समय १० रू० का मूल्य भी बहुत था लगभग १ सेर घी आ जाता था तब महाशय जी बोलते थे कि ब्र० जी के व्यायाम से प्रसन्न होकर श्री म० ओमवीर सिंह जी २०/– प्रदान करते हैं तब १०/– पर इतना जोर देकर कहते जैसे रूपये हजारों हों फिर तो देने वालों की लाइन लग जाती थी और उत्साह वर्धन होता था रात्रि में लोग महाशय जी को चादरें–पैसे एवं धोतियाँ भी दिया करते थे प्रत्येक परिवार में आपका व्यक्तिगत प्रभाव दिखाई दे रहा था।

एक बार हापुड़ के निकट म० आशाराम आर्य भजनोपदेशक जब तक नहीं बने थे उनके ग्राम में प्रचारार्थ गए थे कुँवर सुखपाल जी की पार्टी को बड़े प्यार से बैठाया और चाय बनाते समय चाय की पत्ती के साथ भांग की पत्ती भी डाल दी चाय पीकर प्रचार प्रारम्भ हो गया १५–२० मिनट बाद उसने अपना प्रभाव दिखा दिया वहाँ का वातावरण बड़ा हास्यास्पद रहा प्रचार कार्य नहीं हो सका कारण सभी नशे में कभी हंसते थे कभी भजन सुनाते थे फिर कार्यकर्त्ताओं को प्रताड़न प्रदान की गई और उन्होंने क्षमा याचना की लेकिन क्या हो सकता था?

एक बार बाबूगढ़ छावनी के निकट ग्राम में वेद प्रचार के लिए बुलाया गया वहां जाने के लिए घोड़ा तांगा के अतिरिक्त कोई अन्य साधन नहीं था अतः तांगे वाले से आपने कहा कि हमें भाई "हुडदंग पुर" जाना है। तांगे वाला बोला इस नाम का कोई भी ग्राम इधर नहीं है वे बोले कैसे नहीं है हमारे पास पत्र गया है काफी लोग एकत्रित हो गए पत्र निकाला गया तो ग्राम का नाम था "भडंगपुर नली" तब पढ़कर बोले कि भडंग और हुडदंग में अन्तर ही

शेष पृष्ठ ५ पर

हमारे उच्च पारिवारिक मूल्यों की एक झाँकी

–प्रो० ओम कुमार आर्य

विश्व के प्रायः सभी चिन्तक, विचारक, मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रियों का मानना है कि संयुक्त परिवार, जो आज लगभग बिखराव एवं विलुप्ति के कगार पर है, ऐसी संस्था है जिसमें व्यक्ति को सुखी, शांत व स्वस्थ्य विश्व के निर्माण हेतु आधारभूत, आवश्यक शिक्षण, प्रशिक्षण स्वतः ही सहज एवं क्रियात्मक रूप में मिल जाता है। आज हमारे समाज में विभिन्न क्षेत्रों में जघन्य अपराधों की जो भयानक दुष्प्रवृत्ति और नकारात्मक मानसिकता दिन प्रतिदिन न केवल बढ़ती जा रही है, अपितु बहुत ही विकराल रूप धारण करती जा रही है उसके पीछे अन्य कारण भी होंगे किन्तु एक प्रमुख कारण यह भी है हम अपनी संयुक्त परिवार की प्रथा से दूर होते जा रहे हैं, हम अपनी पारिवारिक जड़ों से हटते और कटते जा रहे हैं, परिणाम सामने है–व्यक्ति शुष्क होता जा रहा है, जीवन में नीरसता भरती जा रही है, हमारी परम्परायें, मर्यादायें सब नष्ट होती जा रही है, जड़ों से अलग हो जाने के स्वाभाविक दुष्परिणाम हैं, इनसे हम बच नहीं सकते। किन्तु यदि हम अपने अतीत की ओर लौटें, अपने ग्रन्थ रत्नों को पढ़ें, अपने पूर्वजों का अनुकरण करें, वैदिक पथ का अनुगमन करें तो हम देखेंगे कि न केवल हमारे समाज का कायाकल्प होता है, बल्कि सारा विश्व एक बहुत ही सुन्दर, सुरक्षित और जीने लायक आदर्श विश्व बन जायेगा। हमारे पारिवारिक मूल्य कितने ऊँचे थे, गौरवपूर्ण थे, जिनके चलते हम विश्व में सर्वोपरि थे, जगद्गुरू थे, हमारी संस्कृति 'सा एव प्रथमा संस्कृति विश्वास' कहलाती थी, हम विश्व के अन्य देशों को नैतिक, चारित्रिक, मूल्यों की शिक्षा देते थे, देखिए 'मनुस्मृति' का यह कथन कि–

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशाद् अग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

हमारी इस उच्चता, भव्यता और विश्व–व्यापी ख्याति का आधार जहाँ हमारी उदात्त वैदिक शिक्षायें थीं यथा–

'अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवित संमनाः
सह्रदयं सामनस्यं अविद्वेषं कृणोमिवः'
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा
आ ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्
तेन त्वक्तेन भुज्जीन्याः' 'मनुर्भव'

आदि–आदि वहीं रामायण महाभारतादि में भी जो उच्च वैयक्तिक, पारिवारिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्य निरूपित हैं उनका भी योगदान कोई कम नहीं है। आइये देखें इनकी एक सुन्दर झलक और झांकी जो अंकित है 'महाभारत' के पृष्ठों पर, यक्ष–युधिष्ठिर संवाद के उपाख्यान में।

इससे पूर्ववर्ती अध्याय में यक्ष–युधिष्ठिर का संवाद समाप्त हो चुका है। यक्ष ने प्रश्न पूछे युधिष्ठिर ने उनका सटीक, सार्थक एवं सारगर्भित उत्तर दिया। यक्ष संतुष्ट हुए, प्रसन्न भी और बोले कि युधिष्ठिर तुम अपने चारों भाइयों में से किसी एक का (एक से अधिक नहीं, मात्र एक) जीवित करवा सकते हो, मैं उसको जीवित कर दूंगा। यह प्रश्न सुनने में तो सरल लगता है, किन्तु युधिष्ठिर तो धर्मज्ञ थे, विचारशील थे। वे सोचने लगे–हम पांचों भाइयों में कोई भेद नहीं, सभी अनरू चारों को समान स्नेह करते हैं, कौन किस मां से है कभी विचार ही मन में नहीं आया। सभी सहोदर हैं, ऐसा आचरण सबका रहा है। किन्तु यह भी तो सत्य है कि हममें से तीन कौन्तेय (कुन्ती के पुत्र) हैं, मैं (युधिष्ठिर) भीम और अर्जुन, तथा दो माद्रेय (माद्री के पुत्र), नकुल और सहदेव। यहाँ युधिष्ठिर की वह ऊँची सोच तो देखिये। जिससे हमारे परिवार अपनी विशेषताओं के लिये जाने जाते थे, हमारी अलग पहचान थी। हमारे व्यवहार में वे उच्च मूल्य निहित वे जो अन्यत्र लगभग अकल्पनीय हैं। युधिष्ठिर सोच रहे थे, आगे एक श्लोक में कहा भी है कि माँ कुन्ती आज जीवित हैं, कल न भी रहे तो उसकी निशानी तो मैं (युधिष्ठिर) हूँ ही लेकिन माँ माद्री आज नहीं हैं, नकुल सहदेव मृत पड़े हैं (वस्तुतः तो वे मूर्च्छा में थे) यदि मैं भीम अथवा अर्जुन को जीवित करवाता हूँ तो यह माँ माद्री के साथ अन्याय होगा, उनकी तो कोई निशानी ही कहीं नही बचेगी। वे भी तो हमारी माँ ही थी। सारे भाई समान हैं मेरे लिये किन्तु माँ माद्री के लिये मुझे नकुल को जीवित करवाना है। इसलिये जब यक्ष ने कहा–

'तस्मात् त्वमेकं भ्रातृणां यमिच्छसि स जीवतु'

हे युधिष्ठिर, अपने भाइयों में से जिस एक को तुम जीवित करवाना चाहो वह जीवित हो जायेगा। तब युधिष्ठिर ने जो कहा था, उसका वह कथन हमारी गौरवमयी पारिवारिक परम्पराओं का एक दीप्तिमान् प्रतीक था, उसका वह कथन हमारी गौरवमयी पारिवारिक परम्पराओं का एक दीप्तिमान् प्रतीक था, जिस पर हमें गर्व है, जिस पर हमारी संयुक्त परिवार संस्था की यह भव्य इमारत समय को चुनौती देती हुई सदियों तक अक्षुण्ण खड़ी रही है, किन्तु आज हामरी उपेक्षा, मूर्खता और पाश्चात्यों के अंधानुकरण के चलते खतरा पैदा हो गया है कि कहीं इस भव्य भवन की नींव दरक न जाये, कहीं यह पूरी तरह धराशायी होकर इतिहास के पन्नों पर एक स्मृति भर शेष न रह जाये। युधिष्ठर बोले–

..... महाबाहुर्नकुलो यक्ष जीवतु' हे यक्ष मेरा भाई महाबाहु नकुल जीवित हो जाये। यक्ष ने बनावटी आश्चर्य दिखाते हुये कहा था, युधिष्ठिर अपने प्रिय भाई भीम और अजेय धनुर्धर अर्जुन को छोड़कर तुम सौतेले भाई नकुल को जीवित करवाना चाहते हो? क्या तुम पागल हो गये हो। देखें यक्ष के वचनों को–

प्रियस्ते भीमसेनाऽयमर्जुनो यः परायणम्।
स कस्मान्नकुलं राजन् सापत्नं जीव मिच्छसि।।

अरे तुम सौतेले (सापत्नं) भाई नकुल को जीवित करवाना चाहते हो? क्यों? युधिष्ठिर तुम्हारी अक्ल पर मुझे तरस आता है। तब धीरे गम्भीर युधिष्ठिर ने कहा था हे यक्ष, जहां तक बल का प्रश्न है, मेरे ये चारों भाई समानरूप में महाबली हैं। ये मेरी भुजायें हैं, इनमें से कोई एक भी मेरे साथ खड़ा हो तो हम दोनों भाई शेष सब योद्धाओं पर भारी पड़ेंगे, हम अजेय हैं। मैं धर्म का त्याग नहीं कर सकता। धर्म, न्याय यही कहता है कि हमारी दो माँएं थीं, दोनों पुत्रवती रहें, कुन्ती भी और माद्री भी, इसलिये–

'स्वधर्मान्न चलिष्यामि नकुलो यक्ष जीवतु'

मैं अपने धर्म से विचलित नहीं होऊंगा, नकुल को ही जीवित देखना चाहता हूँ। क्योंकि–

कुन्ती चैव तु माद्री च व्दे आर्ये तु पितुर्मम्।
उभे सपुत्रे स्यातां वै इति में धीयते मतिः।।
यथा कुन्ती तथा माद्री विशेषो नास्ति में तयोः।
मातृभ्यां सममिच्छामि नकुलो यज्ञ जीवतु।।

मेरे लिये जैसी माँ कुन्ती, वैसी ही मां माद्री है। दोनों माताओं के प्रति समान भाव रखना चाहता हूँ, इसलिये नकुल ही जीवित हो जाये।

ये थे हमारे उच्च पारिवारिक मूल्य। यह परम्परा सुदीर्घ काल से चली आई है। महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि इस देश का पतन महाभारत से लगभग एक हजार वर्ष पूर्व ही प्रारम्भ हो गया था, महाभारत तो हमारे पतन की पराकाष्ठा थी। उस घोर को क्या नाम दें, महानाश? घोर दुर्भाग्य पतन के काल में भी हमारी मर्यादायें किसी न किसी रूप में, पूरी नहीं अंशतः ही सही जीवित थीं। आज के इस घोर पतन का अंतिम छोर? सगे भाइयों की तलवारें एक दूसरे की गर्दन पर तनी हैं, सौतेलों की क्या कहें? खून के रिश्ते तार–तार हैं, सामाजिक रिश्तों को आज पूछता कौन है? आपसी प्यार खत्म, स्नेह समाप्त, विश्वास समाप्त? आज का युधिष्ठिर कुन्ती को किसी गिनती में नहीं गिनता, माद्री तो उसकी लगती क्या है? चूंकि हमने अपने भव्य अतीत को भुला दिया, संबंधों की गरिमा को ध्वस्त कर दिया इसलिये आज हमारे परिवार कलह, क्लेश के अड्डे बने हुये हैं। परिवार मानवीय गुणों की पौधशाला हुआ करते थे। हम बिना किसी औपचारिक शिक्षण–प्रशिक्षण के अपने पारिवारिक वातावरण में बड़े छोटे का यथायोग्य मान सम्मान, स्थिति के अनुसार अनुकूल, त्यागभाव, सहनशीलता, धैर्य आदि गुण सीख लेते थे, धारण कर लेते थे। संयुक्त परिवार वातावरण में बड़े छोटे का यथायोग्य मान सम्मान, स्थिति के अनुसार अनुकूल, त्यागभाव, सहनशीलता, धैर्य आदि गुण सीख लेते थे, धारण कर लेते थे। संयुक्त परिवार एक वटवृक्ष हुआ करता था जहाँ सबको आश्रय, प्यार, आपसी सहानुभूति मिला करती थी और ये ही उच्च गुण हमसे अपने समाज को मिलते थे। जब गुणों और मूल्यों का स्त्रोत ही सूखा पड़ा हो तो आगे प्रदान की प्रक्रिया तो अपने आप रुकेगी ही। इस वृद्ध भारत ने वे सौभाग्य के दिन भी देखें है जब इसके रमा के लिये कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा तीनों में रंचमात्र भी भेद नहीं था, जब वासुदेव नंदलाल भी था, देवकीनन्दन और यशोदानन्दन दोनों एक थे, तब इस भारतभूमि का सौभाग्य सितारा सबसे उज्ज्वलतम था। किन्तु आज यह भारतभूमि अपनी बदनसीबी पर खून के आंसू बहा रही है? कौन लौटाकर लायेगा इसका गौरवशाली अतीत? कौन पुनर्जीवित करेगा इसकी उच्च मर्यादायें, इसकी परम्परायें, इसके उच्च वैयक्तिक पारिवारिक मूल्य व आदर्श। उत्तर दो, आश्वस्त करो इस रोती बिलखती, सपूतों की जननी वृद्ध भारत माँ को कि यह बीड़ा हम उठाते हैं। हम निभायेंगे अपने, पुत्र धर्म को और उद्घोष करते हुये, संकल्प के साथ गाते हुये आगे बढ़ेंगे जीवन उच्च बनेगा उस दिन जब विचार हमारे सुधरेंगे मानव, मानव तभी बनेगा, जब संस्कार हमारे सुधरेंगे वेद, शास्त्र, रामायण महाभारतादिकी सीख यही राष्ट्र आदर्श बनेगा उस दिन जब परिवार हमारे सुधरेंगे। हम कृत संकल्प हैं, वचनबद्ध हैं, पुनः अपने देश को गौरव और प्रतिष्ठा के उच्चासन पर आसीन करेंगे। हम राम हैं, भरत हैं, कृष्ण हैं, युधिष्ठिर है वैदिक नाद गुंजायेंगे।

वैदिक संस्कृति और महर्षि दयानन्द

–डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य, रोहतक

संसार में अनेक साधारण घटनाएँ सबके सामने प्रतिदिन होती रहती हैं। जन साधारण की दृष्टि में वे कोई विशेष महत्त्व नहीं रखती, किन्तु वही साधारण घटनाएँ महापुरुषों के जीवन में एक महान् परिवर्तन उत्पन्न कर देती हैं। रोगियों, बूढ़ों और शवयात्रा आदि को सब देखते हैं, किन्तु इन्हीं साधारण दृश्यों ने राजकुमार सिद्धार्थ को महात्मा बुद्ध बना दिया। जिन्होंने अपनी अहिंसा की शिक्षा से करुणा और सहानुभूति का स्रोत बहाया। वृक्ष से गिरते हुए फल को हम प्रायः देखते हैं किन्तु न्यूटन की दिव्य दृष्टि ने एक वृक्ष से गिरते हुए फल को देखकर पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण का साक्षात्कार किया। इसी प्रकार महर्षि दयानन्द ने महाशिवरात्रि व्रत के अवसर पर शिव मन्दिर में शिवलिंग पर चढ़ते हुए एक चूहे को देखा तथा उनके मन में सच्चे शिव के दर्शन की प्रबल इच्छा हुई तथा अपनी बहन व उनसे अत्यन्त स्नेह करने वाला चाचा की मृत्यु ने उनके हृदय पर एक कड़ी चोट लगाई और उन्होंने मृत्यु दुःख से छुटकारा पाने का मन में दृढ़ संकल्प कर लिया।

ये समस्याएं उनके मन में बस गई। उनकी महत्ता और गम्भीरता उनकी नस–नस में रम गई। माता का प्रेम और पिता की विपुल सम्पत्ति उन्हें मोहित न कर सकी। क्योंकि वे वस्तुएं उनके उद्देश्य को पूर्ण करने में कोई सहायता नहीं करती थी। विवाह की कोमल और सुन्दर प्रयत्न करते रहे किन्तु जब विवाह मृत्यु के प्रश्न का समाधान नहीं कर सकता तो वह उनके किस काम का था? जब उन्होंने देखा कि पिता की चार दिवारी के भीतर इस मान् प्रश्न के समाधान का कोई साधन नहीं है, तब उनहोंने घर छोड़कर खुले जंगल का मार्ग पकड़ा और इस कठिन प्रश्न के समाधान के लिए कठोर ब्रह्मचर्यव्रत को धारण किया। इससे बढ़िया साधन संसार के इतिहास में कहीं नहीं मिल सकता। ब्रह्मचर्य का साधन कठिनाईयों को सरल करने वाला एक विचित्र साधन है। जिसकी महिमा का वर्णन करते हुए भीष्म पितामह महाराजा युधिष्ठिर से कहते हैं– जो जन्म लेकर मरण पर्यन्त ब्रह्मचारी रहता है, उसके लिए कोई ऐसी वस्तु नहीं, जिसको कि वह प्राप्त न कर सकें।'

मृत्यु के कठिन प्रश्न का समाधान करने वाला दूसरा साधन उन्होंने योगविद्या को समझा। जिसकी खोज में वे हिमालय की हिमाच्छादित चट्टानों पर सुकरात के समान नंगे पांव, नंगे शरीर एक कौपीन धारण करके घूमते रहे। भयंकरक जंगल, पर्वत और बर्फीली नदियां पर करे रहे। वे आबू पर्वत और हिमालय वासी योगियों से योग विद्या को ग्रहण करते रहे। अन्त में उन्होंने योग–विद्या के द्वारा सच्चे शिव के दर्शन करे मृत्यु पर विजय प्राप्त की। उनकी मेधा–बुद्धि, अद्भुत–स्मृति, योगसमाधि, वेदविद्या, के द्वारा सच्चे शिव के दर्शन करे मृत्यु पर विजय प्राप्त की। उनकी मेधा–बुद्धि, अद्भुत–स्मृति, योगसमाधि, वेदविद्या, परोपकार, ब्रह्मचर्य, संन्यास, निष्कामकर्म, आत्मबल और सत्य का मण्डन आदि इस बात के साक्षी है कि वे साधारण मनुष्य कोटि से ऊपर उठकर ऋषि श्रेणी में शामिल हो गये थे। उनके उच्च जीवन का वर्णन एक ही शब्द से हो जाता है कि वे महर्षि थे। महर्षि दयानन्द मानव के उत्तम निर्माण के लिए ईश्वर की उपासना को अत्यन्त महत्वपूर्ण समझते हैं। ईश्वर के ज्ञान के बिना मानव का जीवन आसार है। इसलिये वे लिखते हैं कि "सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है" परमेश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधिकार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक सर्वान्यर्मामी अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसकी उपासना का परित्याग कर एक निराकार सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उपासना का विधान किया है।

महर्षि दयानन्द जीवन में सत्य और असत्य की पहचान के लिए वेदों का ज्ञान अनिवार्य समझते हैं। इसलिये वे लिखते हैं कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" वेद के आधार पर सत्य और असत्य की परीक्षा करके "सब मनुष्य सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहें।"

महर्षि दयानन्द वेद को एक ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। ईश्वर सृष्टि के प्रारम्भ में अग्नि आदि ऋषियों के हृदय में वेद–ज्ञान का प्रकाश करता है ईश्वर के उपदेश क बिना मनुष्य कभी ज्ञान को नहीं बढ़ा सकते और न ही पुस्तक आदि की रचना कर सकते है। जैसे जंगली मनुष्य सृष्टि को देखकर कभी विद्वान नहीं होते, लेकिन यदि उनको शिक्षक मिल जाये तो विद्वान हो जाते हैं, और आज भी किसी से पढ़े बिना कोई भी विद्वान नहीं होता। इसलिये यदि परमात्मा सृष्टि के आदि ऋषियों को वेद विद्या न पढ़ाता और वे अन्यों को न पढ़ाते तो सब लोग अविद्वान ही रह जाते। जैसे किसी बालक को जन्म से ही एकांत प्रदेश में अविद्वानों अथवा पशुओं के संग रख दिया जाये तो वह जैसा संग होगा वैसा बन जायेगा। जंगली भील–आदि जातियां इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

जब तक आर्यावर्त्त देश से शिक्षा नहीं गई थी तब तक मिस्र, यूनान और यूरोपादि देशों के मनुष्यों में कुछ भी विद्या नहीं थी, और कोलम्बस आदि पुरुष अमेरिका में तब तक नहीं गये थे तब तक वे भी करोड़ों वर्षों से विद्याहीन थे। पुनः सुशिक्षा के होने से विद्यावान् हो गये हैं। ऐसे ही सृष्टि के आदि में परमात्मा से विद्या प्राप्त करके उत्तरोत्तर कल में विद्वान् होते आये हैं। वह ईश्वर अग्नि आदि ऋषियों का गुरु अर्थात् अध्यापक है।

"मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद" इस शतपथ ब्राह्मण के वचन के आधार

शेष पृष्ठ ६ पर

पृष्ठ ३ का शेष

कुँवर सुखपाल सिंह ...

क्या है? समानान्तर ही तो हैं वहां हास्य रस का प्रचार कर दिया और ग्राम में जाकर भी घटना सुनाई रात्रि के समय प्रचार में जब हम गुरूकुल से पहुंचे तो हमें भी सुनाकर अच्छा मनोरंजन किया।

इस प्रकार म० सुखपाल जी प्रचार क्षेत्र में अपनी विशेष पहिचान बनाकर रहे हैं आपने बहुत अच्छा कार्य यही किया है कि दो पुत्र आर्य समाज के प्रचारक बनाकर उ०प्र० पंजाब सभा तथा दिल्ली सभा में कार्य कर रहे हैं। आपने इतिहास के भजन अधिक लिखें हैं पर दो गीत आपके सुपरहिट हुए हैं और लम्बे समय तक उपदेशक सुनाकर प्रशंसा प्राप्त करते रहे हैं और आज भी सामयिक होने से प्राप्त कर रहे हैं।

भैय्या रे भैय्या हो...

१. हमें यह समाज बदलना है, कल परसों को छोड़ो आज बदलना है।।

२. मेरे देश बहिमें, योद्धा जन्में–जन्में वीर निराले।। मेरे देश की बहिनें....

गौतम–कपिल, कणाद मनु, दयानन्द से हो योगी।

३. वेदों का यहां किया उजाला–देश बना था रोगी।।१।। मेरे.....

जन्में शिवा प्रताप यहाँ–शम्भा जी के बाप यहाँ।

४. हरिसिंह नलवा अमर सिंह का–अमर रहे इतिहास यहाँ।। मेरे.....

५. आप समर में बच्चा कमर में–वो झाँसी की रानी।

कभी नहीं भूलेंगे गौर–उसकी अमिट कहानी।।३।।मेरे.....

हाथ हमेशा रही तुम्हारे–गुण गौरव की वो चाबी।

सुखपाल पश्चिम हवा ने कर दी–पैदा यहाँ खराबी।।४।।मेरे.....

भजन तो काफी बड़ा है आप सभी पाठकों की इच्छा होगी तो आर्यमित्र में पृथक् से प्रकाशन हो जायेगा लेख के वृहत्तम से संकोच कर रहा हूँ आपका प्रचार प्रभावशाली हुआ करता था हास्य रस की पुट देकर लोगों में मीठी चोट व्यंग भाषा में भी आप पीछे नहीं रहे १६ दिसम्बर २०१८ को गुरूकुल गौतम नगर नई दिल्ली में आपको सम्मानित किया गया आपका प्रचार क्षेत्र प० उ०प्र० हरयाणा पंजाब अधिक रहा है आज ६२ वर्ष की आयु में भी आप सजग हैं पिछले वर्ष से स्वास्थ्य कुछ अच्छा नहीं रहता पर मन पूरी उड़ाने भरता रहता है। मुझे इनके पुत्रों के फोन आते रहते हैं कि पिता जी का सहयोग करो में कहता हूं कि सेवाधर्म आपका भी है वे समाज सेवा में रहे तो समाज भी करेगा सभा से भी कुछ सहयोग करया है आपसे भी निवेदन करूँगा कि जो ऐसे लोगों पर अपनी करूणा, दया, आस्था, विश्वास रखते हैं वे यदि परिचित हैं तो सीधे भेज सकते हैं अन्यथा हम सभा द्वारा आपके द्वारा प्रेषित राशि उनके घर पर भिजवाते रहेगें।

मैं अपने गुरूकुल परिवार एवं आर्य प्रतिनिधि सभा परिवार की ओर से उनके दीर्घा पुष्प एवं उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

पृष्ठ ५ का शेष

वैदिक संस्कृति और महर्षि...

पर बतलाया है कि बालक के माता, पिता और आचार्य ये तीन शिक्षक हैं। इनकी उत्तम शिक्षा से मनुष्य ज्ञानवान् बनता है। पांच वर्ष की आयु तक माता पिता तथा आठ वर्ष की आयु तक पिता बालक को उत्तम शिक्षा प्रदान करें। यह राजनियम तथा जातिनियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़के और लड़कियों को कोई घर में न रख सके। पाठशाला में अवश्य भेज देवें। जो न भेजें वे दण्डनीय हों। पाठशालाएं नगर के वातावरण दूर हों। वहां सब बालकों को तुल्य वस्त्र, खान–पान, आसन दिये जायें। चाहे वे राजकुमार या राजकुमारी हों, चाहे वह दरिद्र की सन्तान हों। सबको तपस्वी होना चाहिए। कन्याओं की पाठशाला में अध्यापिका और सेवक आदि सब स्त्री हों और ब्रह्मचारिणी रहें। और शिक्षक लोग उन्हें विषयों से बचायें। जिससे वे उत्तम विद्या, शिक्षा, शील, स्वभाव, शरीर और आत्मा के बल से युक्त सभ्य नागरिक बन सकें। छात्र तथा छात्रायें आचार्य कुल में रहकर वेदांग, दर्शन, उपनिषद्, ब्राह्मणग्रन्थ, वेद, आयुर्वेद धनुर्वेद अर्थात् राजविद्या, गन्धर्व वेद अर्थात् गान विद्या, अथर्ववेद अर्थात् शिल्पविद्या, ज्योतिष शास्त्र अर्थात् बीजगणित, अंकगणित, भूगोल खगोल और भूगर्भ–विद्या को सीखें। स्त्री, पुरुष अर्थात मनुष्य मात्र को पढ़ाने का अधिकार है। जैसे पृथ्वी आदि पदार्थ सब के लिये हैं वैसे ईश्वर का उपदेश है –''यथेमां वाचं कल्याणीमा वदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय''। (यजु.२६/२) ईश्वर आज्ञा देता है कि जैसे मैं सब मनुष्यों के लिए कल्याणी अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देने वाली वेदवाणी का उपदेश करता हूँ, वैसे भी तुम भी किया करो।

शिक्षा के उपरान्त आचार्य अपने शिष्य तथा शिष्याओं को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों में दीक्षित करता है। जिस शिष्य में अध्ययन, अध्यापन, यज्ञ करना–कराना, शम, दम तथा तप आदि कर्म तथा गुणों की प्रवृत्ति देखता है उसे ब्राह्मण वर्ण में दीक्षित करता है। और वह समाज में पाठक, शिक्षक, शिक्षाधिकारी, राजपुरोहित, पुराहितादि रूप में सेवा करता है। जिस शिष्य में गौ आदि पशुओं का पालन, कृषि, व्यापार आदि कर्मों में प्रवृत्ति देखता है उसे वैश्य वर्ण में दीक्षित करता है और वह समाज में पशुपालन, दान व्यापार, कृषि, व्यापार आदि कर्मों में प्रवृत्ति देखता है उसे वैश्य वर्ण में दीक्षित करता है और वह समाज में पशुपालन, दान, व्यापार, कृषि आदि कार्य करता है। ब्याज आदि व्यवहार से धनार्जन करता है। मूल से दूना अर्थात् एक रुपया दिया हो तो सौ वर्ष में भी दो रुपये से अधिक नहीं लेता। जिसे पढ़ने तथा पढ़ाने से भी विद्या नहीं आती वह शूद्र रह जाता है। उसके लिए ईवर ने एक ही कर्म का उपदेश किया है कि वह निन्दा, ईर्ष्या, अभिमान आदि दोषों को छोड़कर ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यों की सेवा करे महर्षि दयानन्द मानव जाति के ये ब्राह्मणादि चार भेद उनके गुण और कर्म के आधार पर स्वीकार करते हैं। इसके अतिरिक्त वे जन्म के आधार पर बने विविध जातिभेदों में कोई विश्वास नहीं रखते।

महर्षि ने मानव जाति को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों के नाम से चार भागों में विभक्त किया है। ब्रह्मचर्याश्रम विद्याध्ययन के लिये है। यह स्त्री और पुरुष दोनों के लिए अनिवार्य है। विद्या अध्ययन के उपरान्त गृहस्थाश्रम का विधान किया है यह आश्रम एच्छिक है। जिसकी इच्छा गृहाश्रम में जाने की न हो, तथा अपना जीवन समाज सेवा में ही लगाना चाहता हो वह आजीवन ब्रह्मचर्य से रहकर अपनी योग्यता के अनुसार समाज की सेवा करे। जिसे देश की विशेष सेवा करनी हो वह गृहस्थाश्रम में न जावे तो अच्छा है। जिसने गृहाश्रम में प्रवेश किया है, उसके लिये वानप्रस्थ आश्रम अनिवार्य है। जब सन्तान के भी सन्तान हो जाये तब गृहाश्रम का भार सन्तान का सौंप कर गृह–कार्यों से निवृत्त हो जाये। गृहाश्रम में आई शारीरिक और आत्मिक निर्बलताओं को संयम तथा स्वाध्याय आदि से दूर करे। अपने जीवन के अनुभवों से समाज को लाभान्वित करें। अपनी योग्यता के अनुसार समाज की सेवा करें। जब वैराग्य हो जाये तब संन्यास ग्रहण करें। ब्रह्मचर्य आश्रम से भी सीधा संन्यास आश्रम में जा सकता है। किन्तु यह संन्यास होकर देश–देशान्तर में भ्रमण करे और सर्वत्र वेद विद्या का उपदेश कर समाज का कल्याण करें। इन चार आश्रमों में गृहाश्रम बड़ा है। क्योंकि यह ब्रह्मचर्याश्रम का उत्पत्तिस्थान तथा वानप्रस्थ और संन्यास का आश्रय है।

महर्षि का उपदेश है कि वेदोक्त वर्ण तथा आश्रम धर्म का पालन करते हुए लोग संसार का उपकार करें अर्थात् राष्ट्र की शरीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करें। परस्पर प्रीतिपूर्वक बर्ताव करें। संसार में अविद्या का नाश और विद्या, विज्ञान की वृद्धि करते रहे। मनुष्य केवल अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहें अपितु सबकी उन्नति के लिये प्रयत्न करें और सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझें। स्वाधीनता तथा पराधीनता के विवाद में न पड़े तथा आपस में कभी झगड़ा न करें। सामाजिक सर्वहितकारी नियमों के पालन करने में सब परतन्त्र रहें और वैयक्तिक हितकारी नियमों का पालन में सब स्वतन्त्र रहें। प्रजा राजा के अधीन और राजा प्रजा के अधीन रहे। यदि मनुष्य इस प्रकार परस्पर प्रेम पूर्ण व्यवहार करें तो संसार के सब दुःखों से छूटकर आनन्द को प्राप्त कर सकते हैं।

स्मृति प्रेरणा यज्ञ

आर्य समाज सेहल के प्रधान मा० जयकरण सिंह आर्य ने अपने बड़े भाई म० शोकरण सिंह की स्मृति में प्रेरणा स्वास्ति यज्ञ सम्पन्न कराया इसी समाज के सदस्य प्रवीण आर्य ने अपने पिता श्री योगेश कुमार आर्य की स्मृति में स्वास्ति यज्ञ सम्पन्न करया यज्ञ के ब्रह्मा सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी रहे यज्ञ आचार्य प्रमोद शास्त्री आ. दिनेश शास्त्री आ० प्रदीप जी ने सम्पन्न कराया वेदपाठ गुरूकुल पूठ के ब्रह्म ने किया क्षेत्र से लोगों ने आकर आहुतियाँ प्रदान की महेश आर्य ने भी उद्बोधन दिया स्वामी जी के उपदेश से सभी आर्यजन लाभान्वित हुए।

अमरपाल आर्य, अधिष्ठाता–प्रकाशवीर शास्त्री भवन ब्रजघाट

शोक संवेदना

आर्य समाज ततारपुर हापुड़ के सदस्य वीर सिंह पहलवान् अचानक दिवंगत हो गये उनका शान्ति यज्ञ आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी गुरूकुल ततारपुर ने सम्पन्न कराया प्रधान ओमदत्त आर्य, जयदेव शास्त्री, वीरपाल सिंह आर्य, ऋषि पाल सिंह कुँवर पाल सिंह सहित सैकड़ों लोगों ने आहुतियाँ प्रदान कीं। सभा मंत्री स्वामी जी ने भी शोक संवेदना व्यक्त की है।

–निरन्जन सिंह आर्य, अधिष्ठाता–जिला वेद प्रचार, हापुड़

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का प्रकल्प–
श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री भवन ब्रजघाट गढ़मुक्तेश्वर जिला हापुड़ (उ०प्र०) में

आर्य परिवार सम्मेलन महोत्सव

११–१२ जून को जिला आर्य प्रतिनिधि सभा हापुड़, गा० बाद, गौतमबुद्ध नगर के संयुक्त सौजन्य से आर्य परिवार सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी का सान्निध्या प्राप्त रहा और अध्यक्षता श्री बाबू सुरेन्द्र सिंह आर्य अध्यक्ष जिला सभा ने की संयोजन कुँवर पाल सिंह आर्य और जिला मन्त्री सुन्दरलाल आर्य ने किया कार्यक्रम में यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने कराया मन्त्रपाठ, स्वामी अखिलानन्द सरस्वती एवं आचार्य धन कुमार शास्त्री ने किया तत्पश्चात् सत्संग का कार्यक्रम रहा उसमें दोनों दिन आ० धन कुमार जी शास्त्री–स्वामी अखिलानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती, म० वीरेन्द्र सिंह, म० जगमाल सिंह आर्य समाज हापुड़ एवं मुरादानगर गा०बाद की माताओं ने भी भजन सुनाये जिसमें वीना आर्या प्रधाना, शकुन्तला आर्या मन्त्री, रेखा आर्या के अलावा मुरादनगर से श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य मा० ज्ञानेन्द्र सिंह आचार्य प्रमोद कुमार जी के विचारों से आर्य जनता लाभान्वित हुई जिला आर्य प्रतिनिधि सभा अमरोहा ने भी अपना आर्य परिवार सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें अशोक आर्य, हेतराम, ओमपाल आर्य प्रमुख रहे कार्यक्रम की व्यवस्था में, सुन्दरलाल आर्य, अमरपाल आर्य अधिष्ठाता, अनिल आर्य, हरीश्चन्द्र आर्य नीरज आर्य, कुंवर पाल सिंह आर्य, विजय आर्य, रवीन्द्र उत्साही, सुरेन्द्र कबाड़ी, वीरेन्द्र सिंह ज्ञानेन्द्र चौधरी, ओमदत्त आर्य, पवन आर्य, प्रेम प्रकाश आर्य हापुड़ विशेष सहयोग रहा कार्यक्रम की सफलता के लिए जिला सभा के लिए बहुत–बहुत शुभकामनायें।

–निरञ्जन सिंह अधिष्ठाता, वेदप्रचार हापुड़

आर्य समाज दादरी मेरठ का वार्षिक सम्मेलन

२१, २२, एवं २३ जून को आर्य समाज का सम्मेलन मनाया गया सम्मेलन में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी स्वामी कर्मवीर जी योगी, डा० उमा आर्या, सुलभा शास्त्री, कीर्त्ति आर्या, प्रदीप शास्त्री, राजेन्द्र देव जी, म० धर्मवीर सिंह जीत था समाजसेवी ठा० विक्रम सिंह जी के विचारों से आर्य जनता लाभाविन्त हुई अजय आर्य मनसाराम आर्य जगवीर सिंह आर्य ने सुन्दर व्यवस्था की कार्यक्रम प्रभावशाली रहा ३ दिन ज्ञान गंगा बहती रही। क्षेत्र के सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया मु० नगर जिला सभा के अध्यक्ष सत्येन्द्र सिंह आर्य ने संचालन किया। – प्रदीप शास्त्री

सम्पादकीय.....

योग से सम्पूर्ण विश्व को जोड़ा जा सकता है

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन महत्वपूर्ण है। इसका सदुपयोग हो ताकि उस दिन दुनियाभर में योग को उसकी पूरी गरिमा व महत्ता के साथ सामने रखा जा सके, उसका उत्सव मनाया जा सके। इससे दुनिया भर के लोग न सिर्फ इसके विशुद्ध स्वरूप से परिचित हो सकेंगे, बल्कि योग की अतुलनीय और सार्वभौमिक अपील के बारे में जान सकेंगे और महसूस कर सकेंगे। योग किसी भी मत और संप्रदाय से नहीं जुड़ा है। योग प्रेम, अहिंसा, करूणा और सबको साथ लेकर चलने की बात करता है। योग मत, नस्ल, जाति, वर्ण, क्षेत्र या भाषा के आधार पर जन्में भेदभाव से परे है, इसलिए इसमें पूरी दुनिया को एक परिवार के तौर पर बांधने की क्षमता है।

किसी भी प्रकार के दर्शन, धर्म या संस्कृति के लिए अस्तित्व में बने रखना सरकार के सहयोग के बिना असंभव है। योग अब तक एक अनाथ की तरह से अस्तित्व में था, लेकिन संयुक्त राष्ट्र के द्वारा योग के महत्व को समझ लिए जाने के बाद अब सारे विश्व को योग से लाभ होगा।

भारत ही वह देश है जहां योग की शुरूआत हुई और अब समय आ गया है जब योग को सभी जगह फैलाने की जिम्मेदारी हमारे देश को ले लेनी चाहिए। योग का आरम्भ कक्षाओं से किया जाना चाहिए। योग एक जीवनशैली है और इसे सिर्फ आसन समझना गलत है। बीमारीयुक्त शरीर, हिचकिचाहट से मुक्त आवाज, चिंतामुक्त दिमाग, आत्मविश्वास से भरा व्यक्तित्व और सोच, आसक्तिमुक्त यादें, गर्व की अनुपस्थिति और दुःखों से मुक्त आत्मा ही एक श्रेष्ठ योगी के लक्षण हैं।

योग, जीवन की प्रक्रिया की छानबीन है। इसने मानव के सामने संभावनाओं को खोलने का काम किया जिसने इंसान कुदरत की ओर से तय की गई सीमाओं से परे जा सके। योग विज्ञान को उसक विशुद्ध रूप में दुनिया को मुहैया कराने की जिम्मेदारी इस पीढ़ी की है। आंतरिक व आत्मिक विकास, मानव कल्याण व मुक्ति से जुड़ा यह विज्ञान भावी पीढ़ी के लिए एक महानतम देन है।

यह एक बेहद विशेष और गंभीर मौका है। आज योगिक विज्ञान जितना महत्वपूर्ण हो उठा है, इससे पहले यह कभी इतना महत्वपूर्ण नहीं रहा। आज हमारे पास विज्ञान और तकनीक के तमाम साधन मौजूद हैं, जो इस दुनिया को बना और मिटा सकते हैं। ऐसे में यह बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है कि हमारे भीतर जीवन के प्रति जागरूक और ऐसा भाव बना रहे कि हम रह दूसरे प्राणी को अपना ही अंश महसूस कर सकें। वरना अपने सुख और भलाई के पीछे की हमारी दौड़ सब कुछ बर्बाद कर देगी। अगर दुनियां की कुछ आबादी भी इसका अनुभव कर ले, सचमुच ध्यान के मार्ग पर चलने लगे तो निश्चित तौर पर दुनिया की गुणवत्ता और स्तर में सुधार आएगा। खासकर विश्व के नेताओं ने अगर अपने जीवन में एकात्मकता को, जीवन के योग को समझ लिया और उसे महसूस कर लिया तो दुनिया में खासा बदलाव आ जाएगा। जीवन के प्रति अपने नजरिये में विस्तार लाने, व्यापकता लाने में ही मानव-जाति की सभी समस्याओं का समाधान है। उसे निजता से सार्वभौमिकता या समग्रता की ओर चलना होगा। विश्व योग दिवस इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो इस पूरी धरती पर एक लहर पैदा कर सकता है तथा सम्पूर्ण विश्व को जोड़ सकता है।

— सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ नवमसमुल्लासारम्भः

अथ विद्याऽविद्याबन्धमोक्षविषयान् व्याख्यास्यामः

प्रश्न-मुक्ति एक जन्म में होती है वा अनेकों में?

उत्तर- अनेक जन्मों में। क्योंकि-

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे पराऽवरे।।१।। —मुण्डक।।

जब इस जीव के हृदय की अविद्या अज्ञानरूपी गांठ कट जाती, सब संशय छिन्न होते और दुष्ट कर्म क्षय को प्राप्त होते हैं तभी उस परमात्मा जो कि अपने आत्मा के भीतर और बाहर व्याप रहा है; उसमें निवास करता है।

प्रश्न- मुक्ति में परमेश्वर में जीव मिल जाता है वा पृथक् रहता है?

उत्तर- पृथक रहता है। क्योंकि जो मिल जाय तो मुक्ति का सुख कौन भोगे मुक्ति के जितने साधन हैं वे सब निष्फल हो जावें। वह मुक्ति तो नहीं किन्तु जीव का प्रलय जानना चाहिये। जब जीव परमेश्वर की आज्ञापालन, उत्तम कर्म, सत्संग, योगाभ्यास पूर्वोक्त सब साधन करता है वही मुक्ति को पाता है।

सत्यं ज्ञानमन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्।
सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति।। —तैत्तिरी0।

जो जीवात्मा अपनी बुद्धि और आत्मा में स्थित सत्य ज्ञान और अनन्त आनन्दस्वरूप परमात्मा को जानता है वह उस व्यापक रूप ब्रह्म में स्थित होके उस 'विपश्चित्' अनन्तविद्यायुक्त ब्रह्म के साथ कामों को प्राप्त होता है। अर्थात् जिस-जिस आनन्द की कामना करता है उस-उस आनन्द को प्राप्त होता है। यही मुक्ति कहाती है।

प्रश्न- जैसे शरीर के बिना सांसारिक सुख नहीं भोग सकता वैसे मुक्ति में बिना शरीर आनन्द कैसे भोग सकेगा?

उत्तर- इसका समाधान पूर्व कह आये हैं और इतना अधिक सुनो-जैसे सांसारिक सुख शरीर के आधार से भोगता है वैसे परमेश्वर के आधार मुक्ति के आनन्द को जीवात्मा भोगता है। वह मुक्त जीवन अनन्त व्यापक ब्रह्म में स्वच्छन्द घूमता, शुद्ध ज्ञान से सब सृष्टि को देखता, अन्य मुक्तों के साथ मिलता, सृष्टिविद्या को क्रम से देखता हुआ सब लोकलोकान्तरों में अर्थात् जितने ये लोक दीखते हैं, और नहीं दीखते उन सब में घूमता है। वह सब पदार्थों को जो कि उसके ज्ञान के आगे हैं सब को देखता है। जितना ज्ञान अधिक होता है उसको उतना ही आनन्द अधिक होता है। मुक्ति में जीवात्मा निर्मल होने से पूर्ण ज्ञानी होकर उसको सब सन्निहित पदार्थों का भाव यथावत् होता है।

यही सुखविशेष स्वर्ग और विषय तृष्णा में फंसकर दुःखविशेष भोग करना नरक कहाता है। 'स्वः' सुख का नाम है। 'स्वः सुखं गच्छति यस्मिन स स्वर्गः' 'अतो विपरीतो दुःखभोगो नरक इति' जो सांसारिक सुख है वह सामान्य स्वर्ग और जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है वही विशेष स्वर्ग कहाता है।

सब जीव स्वभाव से सुखप्राप्ति की इच्छा और दुःख का वियोग होना चाहते हैं परन्तु जब तक धर्म नहीं करते और पाप नहीं छोड़ते तब तक उनको सुख का मिलना और दुःख का छूटना न होगा। क्योंकि जिस का कारण अर्थात् मूल होता है वह नष्ट कभी नहीं होता। जैसे-

छिन्ने मूले वृक्षो नश्यति तथा पापे क्षीणे दुःखं नश्यति।

जैसे मूल कट जाने से वृक्ष नष्ट हो जाता है वैसे पाप को छोड़ने से दुःख नष्ट होता है। देखो! मनुस्मृति में पाप और पुण्य की बहुत प्रकार की गति-

मानसं मनसैवायमुपभुङ्क्ते शुभाऽशुभम्। वाचा वाचा कृतं कर्म कायेनैव च कायिकम्।।१।।
शरीरजैः कर्मदोशैर्याति स्थावरतां नरः। वाचिकैः पक्षिमृगतां मानसैरन्त्यजातिताम्।।२।।
यो यदैषां गुणो देहे साकल्येनातिरिच्यते। सं तदा तद्गुणप्रायं तं करोति शरीरिणम्।।३।।
सत्त्वं ज्ञानं तमोऽज्ञानं रागद्वेषौ रजःस्मृतम्। एतद्व्याप्तिमदेतेषां सर्वभूताश्रितं वपुः।।४।।
तत्र यत्प्रीतिसंयुक्तं किञ्चिदात्मनि लक्षयेत्। प्रशान्तमिव शुद्धाभं सत्त्वं तदुपधारयेत्।।५।।
यत्तु दुःखसमायुक्तम् अप्रीतिकरमात्मनः। तद्रजोऽप्रतिघं विद्यात् सततं हारि देहिनाम्।।६।।
यत्तु स्यान्मोहसंयुक्तमव्यक्तं विषयात्मकम्। अप्रतर्क्यम् अविज्ञेयं तमस्तद् उपधारयेत्।।७।।
त्रयाणामपि चैतेषां गुणानां यः फलोदयः। अग्र्यो मध्यो जघन्यश्च तं प्रवक्ष्याम्यशेषतः।।८।।
वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानं शौचिमिन्द्रियनिग्रहः। धर्मक्रियात्मचिन्ता च सात्त्विकं गुणलक्षणम्।।९।।
आरम्भरुचिताऽधैर्य्यम् असत्कार्यपरिग्रहः। विषयोपसेवा चाजस्त्रं राजसं गुणलक्षणम्।।१०।।
लोभः स्वप्नोऽधृतिः क्रौर्यंनास्तिक्यं भिन्नवृत्तिता। याचिष्णुता प्रमादश्च तामसं गुणलक्षणम्।।११।।
यत्कर्म कृत्वा कुर्वंश्च करिष्यंश्चैव लज्जति। तज्ज्ञेयं विदुषा सर्वं तामसं गुणलक्षणम्।।१२।।
येनास्मिन्कर्मणा लोके ख्यातिमिच्छति पुष्कलम। न च शोचत्यसम्पत्तौ तद्विज्ञेयं तु राजसम्।।१३।।
यत्सर्वेणेच्छति ज्ञातुं यन्न लज्जति चाचरन्। तेन तुष्यति चात्मास्य तत्सत्त्वगुणलक्षणम्।।१४।।
तमसो लक्षणं कामो रजसस्त्वर्थ उच्यते। सत्त्वस्य लक्षणं धर्मः श्रैष्ठ्यमेषां यथोत्तरम्।।१५।।

मनु0 अ0 12।।

क्रमशः

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०९४१२७४४३४१, मंत्री- ०९८३७४०२१९२, व्यवस्थापक- ९३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

आर्य समाज दादरी मेरठ आर्य सम्मेलन में भाग लेते हुए सभामंत्री धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी

योगशिविर रामगढ़ तल्ला नैनीताल में यज्ञ करते हुए सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी

जिला प्रतिनिधि सभा हापुड़ में वेद प्रचार करते हुए सभामंत्री

ग्राम बोहर में चल रहे कन्या चरित्र निर्माण शिविर के समापन पर लिया गया छायाचित्र

वैदिक प्रचार समिति द्वारा ऋषि लंगर व मधुर जल सेवा

१७.०६.२०१६ वैदिक प्रचार समिति भगचुरी खटीमा उधमसिंह नगर द्वारा राहगीरों को ऋषि लंगर व मधुर जल पिलाया गया। यह एक ईसाई बाहुल्य क्षेत्र है जहाँ ईसाईयों का प्रचार बहुत ज्यादा है। वैदिक प्रचार समिति लगातार चौदह वर्षों से इस क्षेत्र में वेद प्रचार कार्य रही है । समय-समय पर घर-घर जाकर यज्ञ करना, और उनको आर्य विचारधारा से अवगत कराना, अन्ध विश्वास को समाप्त करना आदि कार्य होते रहते हैं। संयोजक हरीश कुमार शास्त्री ने ग्रामवासियों से मिलकर एकल विद्यालय चलाने की योजना बनायी है जिससे वैदिक प्रचार-प्रसार को और बढ़ाया जा सके इस अवसर पर ग्राम के कई सभ्रांत व्यक्तियों ने भाग लिया। राजेश कुमार मौर्या, शोभनाथ मौर्या, ज्ञान सिंह राणा शरबजीत सिंह राणा, जोगिन्दर कुमार मौर्या, जोगिन्दर कुमार सिंह, अवधेश कुमार मौर्या, ताराचन्द्र विश्ट, सुशील कुमार, सुधीर कुमार, रामसेवक, विनोद कुमार, रामचरन राना, मुख्तार मौर्या आदि महानुभावों ने कार्यक्रम में सहयोग किया। संयोजक ने सबका धन्यवाद दिया और आगामी कार्यक्रम १५ अगस्त को और उत्साह पूर्वक मनाने का संकल्प लिया।

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड राज्य में आर्य समाज द्वारा संचालित एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ से सम्बद्ध आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धक/प्रशासक एवं प्रधानाचार्य/ प्रधानाचार्या/ प्राचार्य की एक आवश्यक बैठक दिनांक २८.०६.२०१६ एवं २९.०६.२०१६ दिन शुक्रवार एवं शनिवार को पूर्वाह्न ११.०० बजे से संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, नारायण स्वामी भवन, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में संस्था प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगी। इस बैठक में विद्यालय प्रबन्ध समिति की वर्तमान गतिविधियों की समीक्षा एवं विद्यालय की विकास के सम्बन्ध में विचार–विमर्श किया जाना है। इस बैठक में विद्यालय के प्रबन्धक एवं प्रधानाचार्य एवं प्राचार्य की उपस्थिति अनिवार्य है। सभी से अपेक्षा है, कि बैठक में भाग लेने की सूचना संस्था के टेलीफोन नं.–०५२२–२२८६३२८ अथवा संस्था के ई–मेल apsabhaup86@gmail.com पर अवश्य भेज दें, जिससे ठहरने आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके। **–स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती**

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।